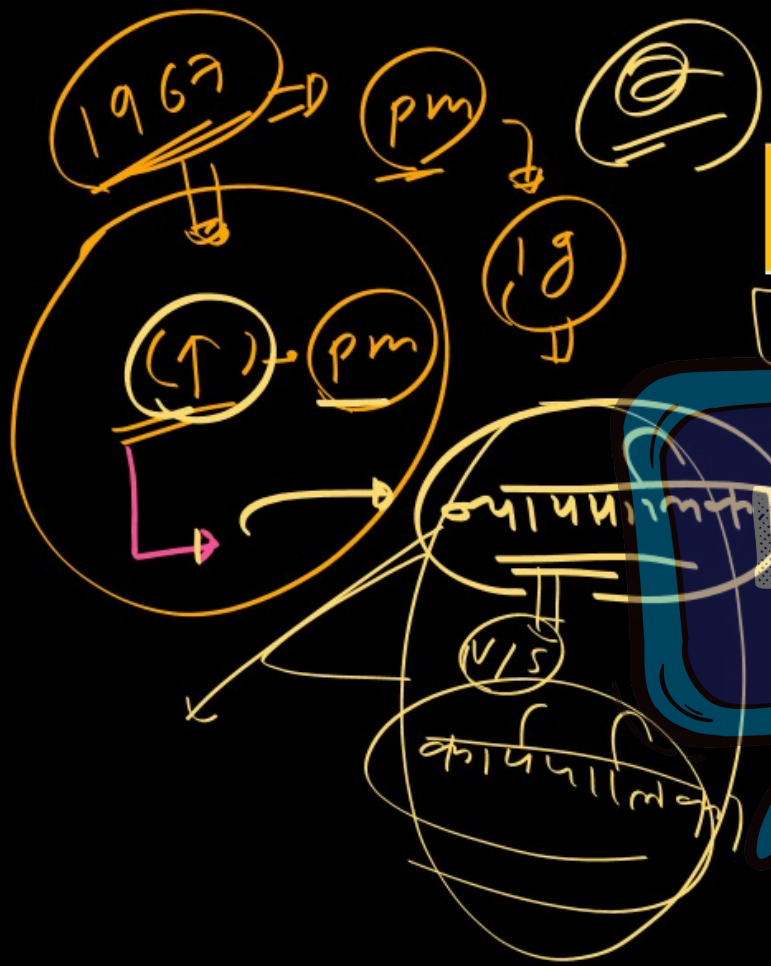

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
ipca | Foundation
कक्षा - 12th | राजनीतिक विज्ञान
ई- पाठशाला
लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट
ONE SHOT
पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...
LIVE | 03 OCT | 6:30 PM



आपातकाल की पृष्ठभूमि

I. राजनीतिक परिस्थिति

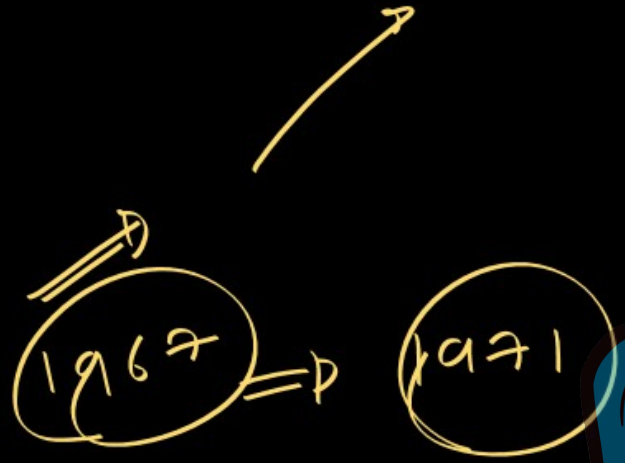
- 1967 के बाद भारतीय राजनीति में बड़े बदलाव आने लगे।
- इंदिरा गांधी एक प्रभावशाली नेता के रूप में उभरीं तथा उनकी लोकप्रियता चरम पर थी।
- दलगत प्रतिस्पर्धा अधिक तीखी और ध्रुवीकृत हो गई।
- सरकार और न्यायपालिका के संबंधों में तनाव बढ़ा।
- सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार की कई पहलों को संविधान के विरुद्ध माना।



- कांग्रेस का मत था कि न्यायपालिका का रवैया:
  - लोकतंत्र के सिद्धांतों के विरुद्ध है।
  - संसद की सर्वोच्चता में बाधा है।
  - गरीबों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रमों को लागू करने में रुकावट पैदा करता है।
- विपक्ष का आरोप था कि:
  - सरकारी प्राधिकार का उपयोग निजी प्राधिकार की तरह किया जा रहा है।
  - राजनीति अत्यधिक व्यक्तिगत होती जा रही है।
- कांग्रेस के विभाजन से इंदिरा गांधी और उनके विरोधियों के बीच मतभेद और गहरे हुए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



II. आर्थिक संदर्भ

A. प्रमुख आर्थिक समस्याएँ

- 1971 के चुनाव में कांग्रेस का प्रमुख नारा— "गरीबी हटाओ"।
- लेकिन 1971-72 के बाद सामाजिक-आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार नहीं हुआ।
- बांग्लादेश संकट से भारतीय अर्थव्यवस्था पर भारी दबाव पड़ा।
- लगभग 80 लाख लोग पूर्वी पाकिस्तान से भारत आए।

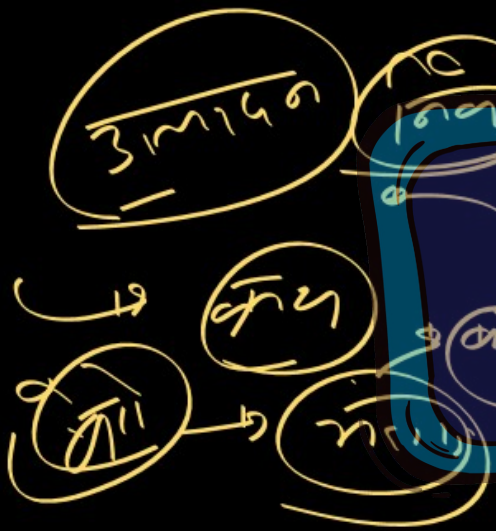


- पाकिस्तान के साथ युद्ध के बाद अमेरिका ने भारत को सहायता देना बंद कर दिया।
- अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में कई गुना वृद्धि हुई।
- परिणामस्वरूप वस्तुओं की कीमतें तेजी से बढ़ीं:
  - 1973 → 23% वृद्धि
  - 1974 → 30% वृद्धि
- तीव्र महँगाई से आम जनता को गंभीर कठिनाइयाँ हुईं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

B. अन्य आर्थिक समस्याएँ



- औद्योगिक विकास की दर कम थी।
- बेरोजगारी तेजी से बढ़ी।
- ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी विशेष रूप से गंभीर थी।
- सरकार ने व्यय कम करने के लिए सरकारी कर्मचारियों के वेतन को रोक दिया।
- इससे सरकारी कर्मचारियों में असंतोष बढ़ा।
- 1972-73 में मानसून असफल रहा।
- कृषि उत्पादन में भारी गिरावट आई।
- खाद्यान्न उत्पादन 8% कम हो गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- पूरे देश में आर्थिक स्थिति को लेकर असंतोष बढ़ा।
- गैर-कांग्रेसी दलों ने जन-विरोध को प्रभावी ढंग से संगठित किया।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Flowchart

- आर्थिक संकट
- ↓
- तेल की कीमतों में वृद्धि
- ↓
- महँगाई
- ↓
- बेरोजगारी + कृषि उत्पादन में गिरावट
- ↓
- सरकारी कर्मचारियों का असंतोष
- ↓
- जन-विरोध
- ↓
- राजनीतिक अस्थिरता

III. उग्र राजनीतिक गतिविधियाँ और नक्सलवादी समूह

- कुछ मार्क्सवादी समूह संसदीय राजनीति में विश्वास नहीं रखते थे।
- इन समूहों ने:
  - मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था समाप्त करने,
  - पूँजीवादी व्यवस्था को खत्म करने,
  - तथा राज्य-विरोधी तकनीकों का उपयोग करने के लिए हथियार उठाए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इन्हें मार्क्सवादी-लेनिनवादी माओवादी अथवा नक्सलवादी कहा गया।
- ये समूह विशेष रूप से पश्चिम बंगाल में सक्रिय थे।
- पश्चिम बंगाल सरकार ने इनके विरुद्ध कठोर कदम उठाए।



IV. गुजरात आंदोलन, 1974

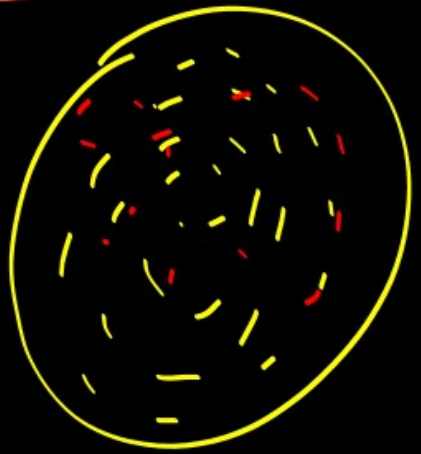
A. कारण

- जनवरी 1974 में गुजरात के छात्रों ने आंदोलन शुरू किया।
- मुख्य कारण:
  - खाद्यान्न की बढ़ती कीमतें
  - खाद्य तेल की बढ़ती कीमतें
  - आवश्यक वस्तुओं की महँगाई
  - उच्च पदों पर भ्रष्टाचार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

June – 1975



B.घटनाक्रम

- बड़ी राजनीतिक पार्टियाँ भी छात्र आंदोलन से जुड़ गईं।
- आंदोलन व्यापक हो गया।
- गुजरात में राष्ट्रपति शासन लगाया गया।
- विपक्ष ने विधानसभा के पुनः चुनाव की माँग की।
- मोरारजी देसाई ने नए चुनाव न होने पर अनिश्चितकालीन भूख-हड़ताल की चेतावनी दी।
- दबाव के कारण जून 1975 में विधानसभा चुनाव हुए।
- चुनाव में कांग्रेस हार गई।

356 ×



V. बिहार आंदोलन, 1974

A. आंदोलन के कारण

- मार्च 1974 में बिहार के छात्रों ने आंदोलन किया।
- मुख्य मुद्दे:
  - बढ़ती कीमतें
  - खाद्यान्न की कमी
  - बेरोजगारी
  - भ्रष्टाचार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

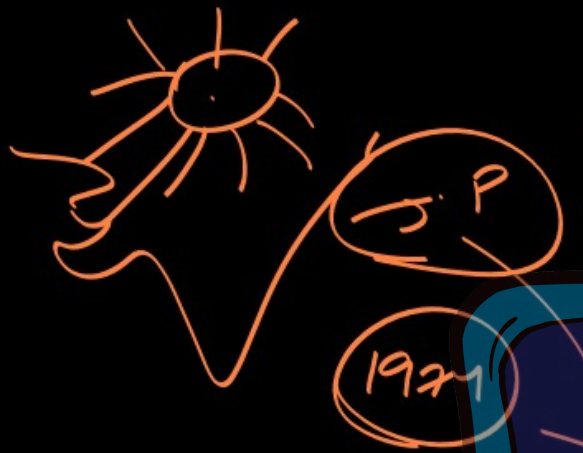


B. जयप्रकाश नारायण की भूमिका

- छात्रों ने जयप्रकाश नारायण (जेपी) को आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए आमंत्रित किया।
- जेपी उस समय सक्रिय राजनीति छोड़कर सामाजिक कार्यों में लगे थे।
- उन्होंने नेतृत्व स्वीकार करने के लिए दो शर्तें रखीं:
  - आंदोलन अहिंसक रहेगा।
  - आंदोलन केवल बिहार तक सीमित नहीं रहेगा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



C. परिणाम

- आंदोलन को राष्ट्रीय राजनीतिक चरित्र मिला।
- विभिन्न वर्गों के लोग इससे जुड़ने लगे।
- जेपी ने बिहार की कांग्रेस सरकार को बर्खास्त करने की माँग की।
- उन्होंने "सम्पूर्ण क्रांति" का आह्वान किया।
- उद्देश्य—सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में परिवर्तन कर "सच्चे लोकतंत्र" की स्थापना।

❖ लगातार:

- घेराव
- बंद
- हड़ताल आयोजित किए गए।

❖ बिहार सरकार ने इस्तीफा देने से इनकार कर दिया।

D. प्रमुख नारा

"सम्पूर्ण क्रांति अब नारा है, भावी इतिहास हमारा है।"

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

VI. बिहार आंदोलन का राष्ट्रीय विस्तार

- जेपी चाहते थे कि आंदोलन देश के अन्य भागों में भी फैले।
- उन्हें समर्थन मिला:
  - भारतीय जनसंघ
  - कांग्रेस (ओ)
  - भारतीय लोकदल
  - सोशलिस्ट पार्टी
- विपक्षी दलों ने जेपी को इंदिरा गांधी के विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया।
- 1975 में जेपी ने जनता के संसद-मार्च का नेतृत्व किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- यह उस समय राजधानी की सबसे बड़ी रैलियों में से एक बताई गई।
- आंदोलन की आलोचना भी हुई।
- गुजरात और बिहार आंदोलनों को:
  - कांग्रेस-विरोधी,
  - तथा इंदिरा गांधी के नेतृत्व के विरुद्ध आंदोलन के रूप में देखा गया।
- इंदिरा गांधी का मानना था कि ये आंदोलन उनके प्रति व्यक्तिगत विरोध से प्रेरित थे।

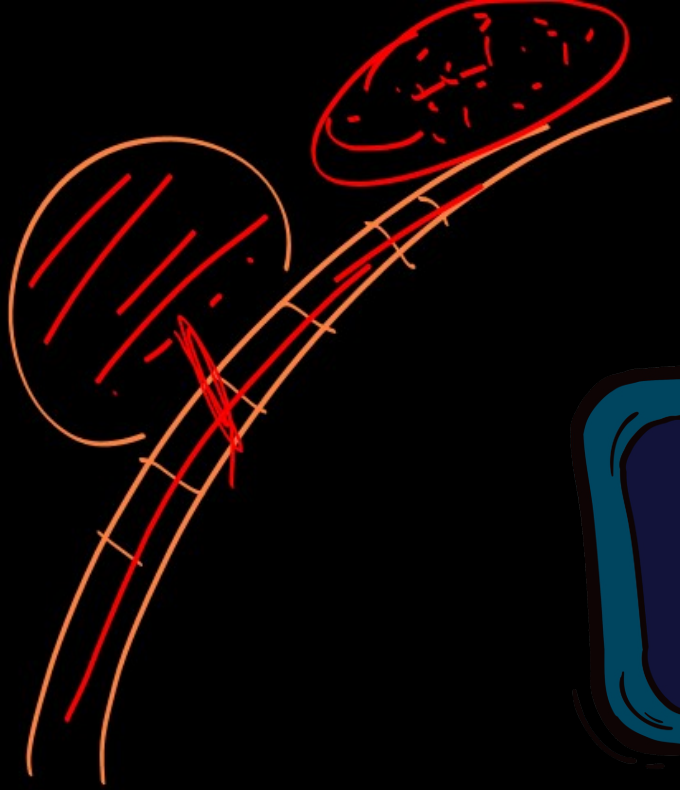
VII. 1974 की रेल हड़ताल

A. नेतृत्व

- जॉर्ज फर्नांडिस
- रेलवे कर्मचारियों के संघर्ष से संबंधित राष्ट्रीय समन्वय समिति

B. मुख्य माँगें

- बोनस
- सेवा से जुड़ी शर्तों में सुधार



C. घटनाक्रम

- मई 1974 में रेलवे कर्मचारी राष्ट्रव्यापी हड़ताल पर चले गए।
- इससे मजदूरों के असंतोष को बढ़ावा मिला।
- प्रश्न उठा कि आवश्यक सेवाओं से जुड़े कर्मचारियों को हड़ताल का अधिकार होना चाहिए या नहीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

D. सरकारी प्रतिक्रिया

- सरकार ने हड़ताल को अवैधानिक घोषित किया।
- कर्मचारियों की माँगें अस्वीकार कीं।
- नेताओं को गिरफ्तार किया।
- रेल लाइनों की सुरक्षा में सेना तैनात की।
- 20 दिन बाद हड़ताल बिना समझौते के वापस ले ली गई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

VIII. सरकार और न्यायपालिका का संघर्ष

A. तीन प्रमुख संवैधानिक प्रश्न

1. क्या संसद मौलिक अधिकारों में कटौती कर सकती है?

➤ सर्वोच्च न्यायालय का उत्तर— नहीं।

2. क्या संविधान संशोधन द्वारा संपत्ति के अधिकार में कटौती की जा सकती है?

➤ सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसी कटौती को स्वीकार नहीं किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

3. क्या नीति-निर्देशक सिद्धांतों को लागू करने के लिए मौलिक अधिकारों को कम किया जा सकता है?
   - सर्वोच्च न्यायालय का उत्तर— नहीं।

4. क्या संविधान संशोधन द्वारा संपत्ति के अधिकार में कटौती की जा सकती है?
   - सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसी कटौती को स्वीकार नहीं किया।

B. परिणाम

- सरकार और न्यायपालिका में तनाव बढ़ा।
- इसका प्रमुख पड़ाव— केशवानंद भारती मामला।

केशवानंद भारती मामले का निष्कर्ष

1973

सर्वोच्च न्यायालय ने कहा:

- संविधान का एक बुनियादी ढाँचा है।
- संसद इस बुनियादी ढाँचे की विशेषताओं में संशोधन नहीं कर सकती।



IX. मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति का विवाद

- 1973 में मुख्य न्यायाधीश का पद खाली हुआ।
- परंपरा थी कि सर्वोच्च न्यायालय के सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश को मुख्य न्यायाधीश बनाया जाए।
- सरकार ने तीन वरिष्ठ न्यायाधीशों की अनदेखी करके न्यायमूर्ति ए.एन. रे को मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया।
- जिन न्यायाधीशों की वरिष्ठता की अनदेखी हुई थी, उन्होंने सरकार के विरुद्ध फैसला दिया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इससे नियुक्ति राजनीतिक रूप से विवादास्पद बन गई।
- प्रधानमंत्री के निकट कुछ लोग "प्रतिबद्ध न्यायपालिका" और "प्रतिबद्ध नौकरशाही" की आवश्यकता की बात करने लगे।
- संघर्ष का चरम तब आया जब उच्च न्यायालय ने इंदिरा गांधी का निर्वाचन अवैध घोषित किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

X. इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला

A. दिनांक

12 जून 1975

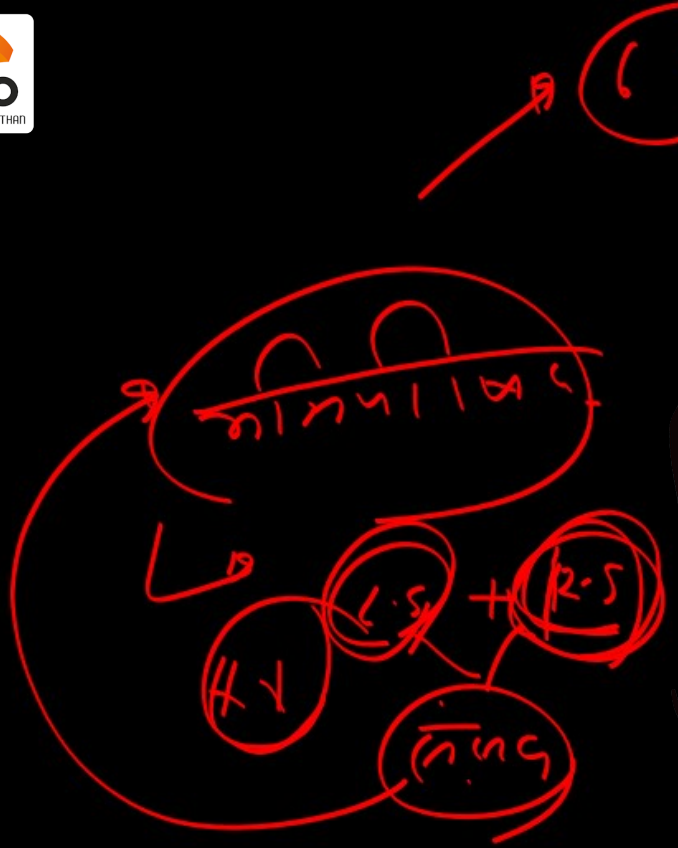
B. न्यायाधीश

जगमोहन लाल सिन्हा



C. मामला

- समाजवादी नेता राजनारायण ने चुनाव याचिका दायर की।
- उन्होंने 1971 के लोकसभा चुनाव में इंदिरा गांधी के खिलाफ चुनाव लड़ा था।
- आरोप था कि इंदिरा गांधी ने चुनाव प्रचार में सरकारी कर्मचारियों की सेवाओं का उपयोग किया।

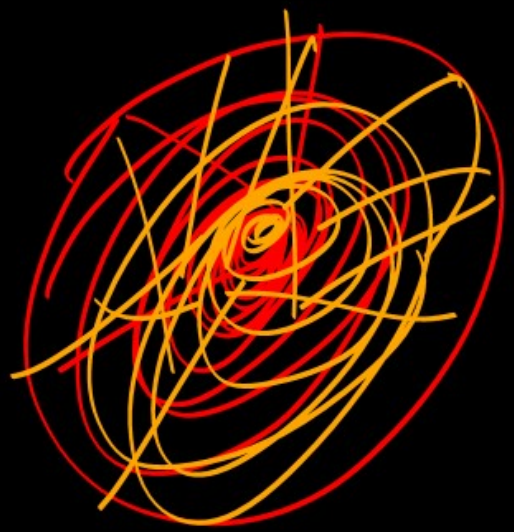


D. फैसला

- इंदिरा गांधी का निर्वाचन अवैधानिक घोषित।
- कानूनी रूप से वे सांसद नहीं रहीं।
- यदि छह महीने में दोबारा सांसद निर्वाचित न होतीं तो प्रधानमंत्री पद पर बने रहना कठिन होता।

E. सर्वोच्च न्यायालय की प्रतिक्रिया

- 24 जून 1975 को आंशिक स्थगनादेश।
- इंदिरा गांधी सांसद बनी रह सकती थीं।
- लेकिन वे लोकसभा की कार्रवाई में भाग नहीं ले सकती थीं।



XI . राजनीतिक संकट और आपातकाल

25 जून 1975 की परिस्थितियाँ

- विपक्ष ने इंदिरा गांधी पर इस्तीफे का दबाव बढ़ाया।
- दिल्ली के रामलीला मैदान में विशाल प्रदर्शन।
- जेपी ने राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह की घोषणा की।
- उन्होंने सेना, पुलिस और सरकारी कर्मचारियों से सरकार के अनैतिक और अवैधानिक आदेशों का पालन न करने का आह्वान किया।
- सरकार को सरकारी कामकाज ठप होने की आशंका हुई।

रिक्त स्थान

1974 की रेलवे हड़ताल _____ के नेतृत्व में हुई।

[Model Paper-2026]

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

रिक्त स्थान

_____ मुकदमे में सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान के बुनियादी ढाँचे की बात कही।

[Model Paper-2023]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1974 की रेल हड़ताल का नेतृत्व किसने किया?

[RBSE-2024]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लघूत्तरात्मक प्रश्न

गुजरात छात्र आंदोलन के दो कारण बताइए।

[RBSE-2024, RBSE-2025]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लघूत्तरात्मक प्रश्न

बिहार छात्र आंदोलन क्यों शुरु हुआ?

[Model Paper-2024, Model Paper-2026]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लघूत्तरात्मक प्रश्न

बिहार छात्र आंदोलन क्यों शुरु हुआ?

[Model Paper-2024, Model Paper-2026]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1975 में आपातकाल से पहले हुए घटनाक्रम की विवेचना कीजिए। [Model Paper-2023]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

नक्सलवादी आंदोलन क्या था?

[Model Paper-2023]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

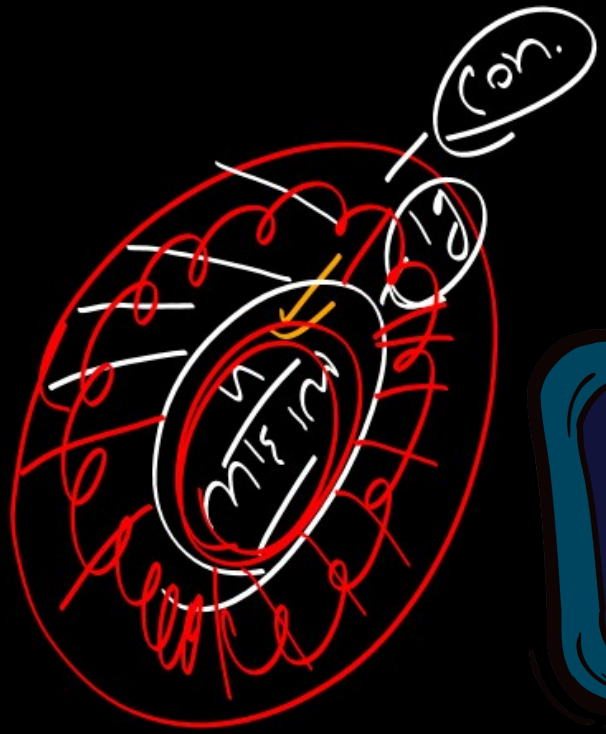
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

निबंधात्मक प्रश्न

1974 के गुजरात और बिहार आंदोलनों की विवेचना कीजिए।

[RBSE-2026]





आपातकाल की घोषणा

I. तिथि

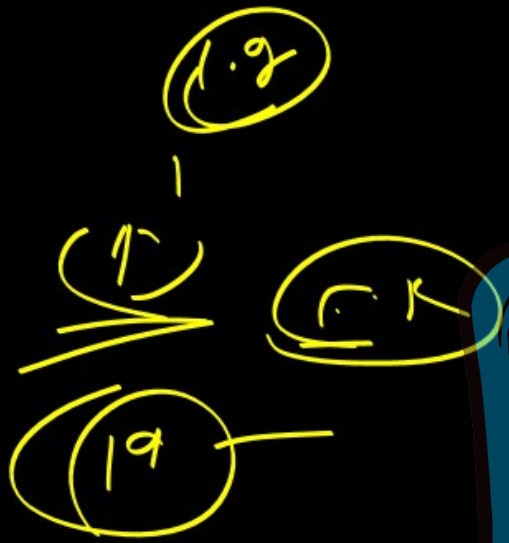
25 जून 1975

II. संवैधानिक आधार

- सरकार ने अनुच्छेद 352 लागू किया।
- तर्क – देश में गड़बड़ी की आशंका है।
- सरकार के अनुसार देश गंभीर संकट में था और आपातकाल आवश्यक था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



III. आपातकाल में केंद्र की शक्तियाँ

- आपातकाल लागू होने पर:

संघीय ढाँचा

↓

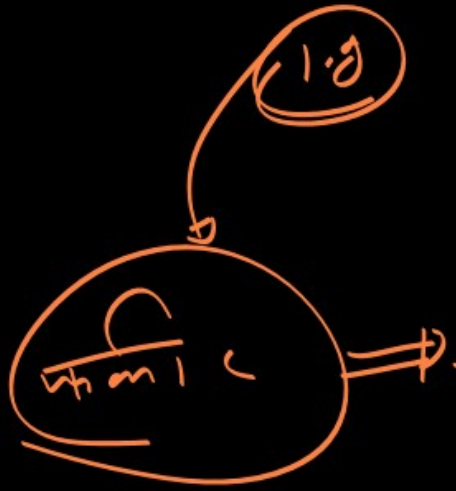
व्यावहारिक रूप से निष्प्रभावी

↓

शक्तियाँ केंद्र सरकार के हाथों में

साथ ही:

- सरकार मौलिक अधिकारों पर रोक लगा सकती थी।
- उनमें कटौती कर सकती थी।
- सामान्य लोकतांत्रिक राजनीति का संचालन सीमित हो जाता था।

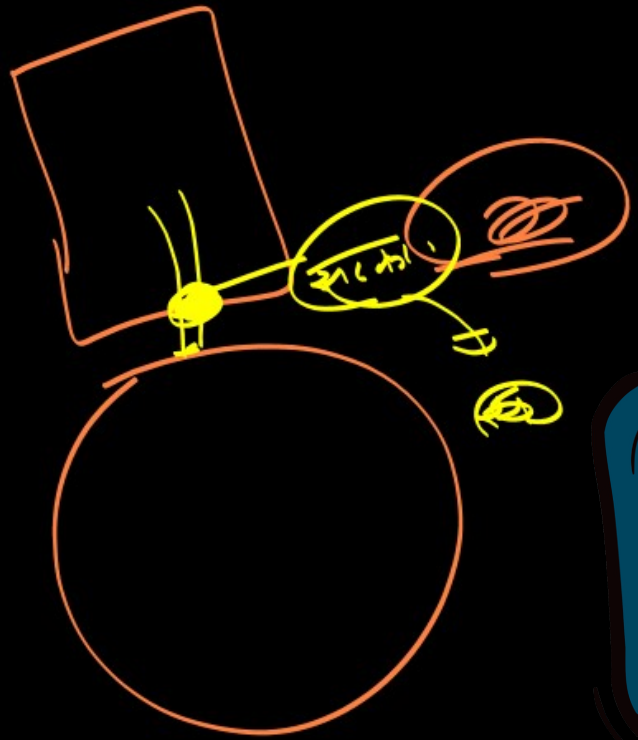


IV. आपातकाल की तत्काल कार्रवाई

- 25 जून 1975 की रात इंदिरा गांधी ने राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद से आपातकाल लागू करने की सिफारिश की।
- राष्ट्रपति ने उद्घोषणा कर दी।
- आधी रात के बाद बड़े अखबारों के कार्यालयों की बिजली काट दी गई।
- बड़े पैमाने पर विपक्षी नेताओं और कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया।
- 26 जून की सुबह मंत्रिमंडल को इसकी सूचना दी गई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



V. आपातकाल के प्रमुख परिणाम

A. राजनीतिक प्रभाव

- विरोध आंदोलन अचानक रुक गया।
- हड़तालों पर रोक।
- विपक्षी नेता जेल में डाले गए।
- राजनीतिक वातावरण में तनावपूर्ण सन्नाटा।

B. प्रेस पर प्रभाव

- प्रेस की स्वतंत्रता पर रोक।
- समाचार प्रकाशित करने से पहले अनुमति आवश्यक।
- इसे प्रेस सेंसरशिप कहा गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

C. संगठनों पर प्रतिबंध

- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS)
- जमात-ए-इस्लामी

D.राजनीतिक गतिविधियों पर रोक

- धरना
- प्रदर्शन
- हड़ताल

E. मौलिक अधिकार

- नागरिकों के कई मौलिक अधिकार निष्प्रभावी हो गए।
- नागरिक मौलिक अधिकारों की बहाली के लिए अदालत नहीं जा सकते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



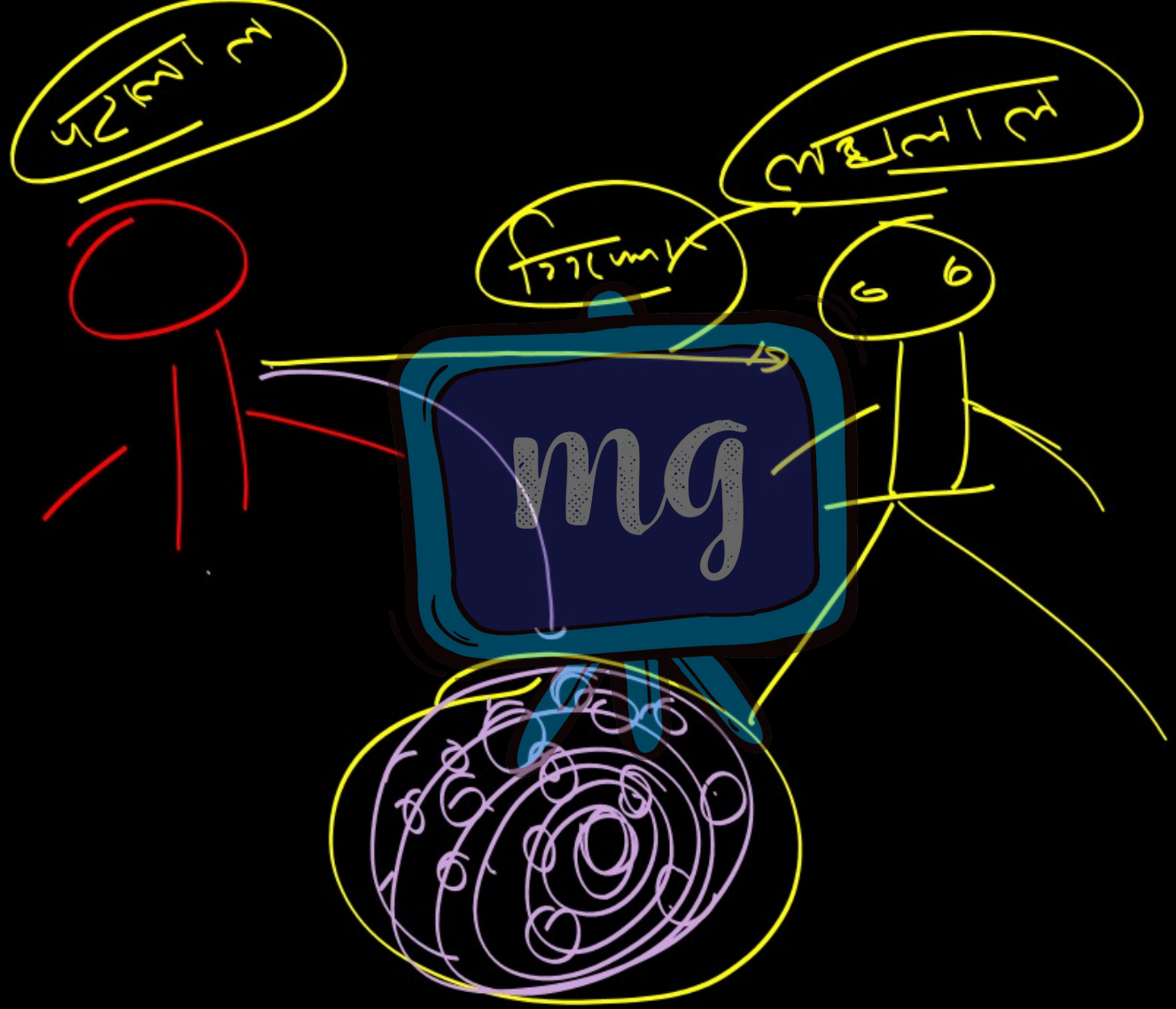
VI. निवारक नज़रबंदी

A. अर्थ

किसी व्यक्ति को इस आधार पर गिरफ्तार करना कि भविष्य में वह अपराध कर सकता है, न कि इसलिए कि उसने पहले से कोई अपराध किया है।

B. आपातकाल के दौरान

- सरकार ने निवारक नज़रबंदी कानूनों का व्यापक प्रयोग किया।
- बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियाँ हुईं।
- राजनीतिक बंदी अपनी गिरफ्तारी को बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका द्वारा चुनौती नहीं दे सकते थे।
- सरकार का मत था कि गिरफ्तारी का कारण बताना आवश्यक नहीं।


mg

C. न्यायपालिका की भूमिका

- कई उच्च न्यायालयों ने बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिकाएँ स्वीकार करने का समर्थन किया।
- लेकिन अप्रैल 1976 में सर्वोच्च न्यायालय की संवैधानिक पीठ ने उच्च न्यायालयों के फैसले पलट दिए।
- सरकार की दलील स्वीकार कर ली गई।
- परिणामतः नागरिकों के लिए अदालत के दरवाजे लगभग बंद हो गए।
- इसे सर्वोच्च न्यायालय के सबसे विवादास्पद फैसलों में माना गया।

VII. आपातकाल का विरोध

A. भूमिगत प्रतिरोध

- गिरफ्तारी से बचे राजनीतिक कार्यकर्ता भूमिगत हो गए।
- सरकार विरोधी अभियान चलाए।

B. समाचार पत्रों का विरोध

- इंडियन एक्सप्रेस
- स्टेट्समैन

जिन समाचारों को छापने से रोका जाता था, उनकी जगह खाली छोड़ दी जाती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पत्रिकाएँ

- सेमिनार
- मेनस्ट्रीम

इन पत्रिकाओं ने सेंसरशिप स्वीकार करने की जगह बंद होना उचित समझा।

C. अन्य माध्यम

- गुप्त न्यूज़लेटर
- लीफलेट

D. सम्मान वापस करने वाले लेखक

- शिवराम कारंत — पद्मभूषण लौटाया।
- फणीश्वरनाथ 'रेणु' — पद्मश्री लौटाया।

VIII . संवैधानिक संशोधन

संविधान में प्रावधान किया गया कि निम्न पदों के निर्वाचन को अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती:

- प्रधानमंत्री
- राष्ट्रपति
- उपराष्ट्रपति

B. 42वाँ संविधान संशोधन

आपातकाल के दौरान 42वाँ संशोधन पारित हुआ।

मुख्य परिवर्तन:

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- विधायिका का कार्यकाल 5 वर्ष से बढ़ाकर 6 वर्ष।
- आपातकाल में चुनाव एक वर्ष के लिए स्थगित किए जा सकते थे।
- इसलिए 1971 के बाद चुनाव 1976 के बजाय 1978 तक टाले जा सकते थे।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

IX. आपातकाल के प्रमुख सबक

A. लोकतंत्र की मजबूती

- आपातकाल ने भारतीय लोकतंत्र की ताकत और कमजोरियाँ दोनों उजागर कीं।
- आपातकाल के बाद अपेक्षाकृत शीघ्र लोकतांत्रिक व्यवस्था बहाल हुई।
- निष्कर्ष—भारत से लोकतंत्र को पूरी तरह समाप्त करना कठिन है।

B. आपातकालीन प्रावधानों में सुधार

- बाद में प्रावधानों में बदलाव किए गए।
- अब आंतरिक आपातकाल केवल “सशस्त्र विद्रोह” की स्थिति में लगाया जा सकता है।
- मंत्रिमंडल को राष्ट्रपति को लिखित सलाह देनी आवश्यक है।

C. नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूकता

- नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी।
- आपातकाल के बाद न्यायपालिका ने नागरिक अधिकारों की रक्षा में अधिक सक्रिय भूमिका अपनाई।
- अनेक नागरिक अधिकार संगठन अस्तित्व में आए।

X. लोकतांत्रिक व्यवस्था की मुख्य चुनौती

आपातकाल ने एक महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा किया—

लोकतांत्रिक सरकार

बनाम

राजनीतिक विरोध

मुख्य प्रश्न:

- नागरिकों को विरोध की कितनी स्वतंत्रता मिलनी चाहिए?
- राजनीतिक विरोध की सीमा क्या हो?
- शासन और जन-विरोध के बीच संतुलन कैसे स्थापित हो?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

XI. पुलिस और प्रशासन की भूमिका

- आपातकाल का वास्तविक क्रियान्वयन मुख्यतः:
  - पुलिस
  - प्रशासन द्वारा किया गया।
- ये संस्थाएँ स्वतंत्र होकर काम नहीं कर सकीं।
- शासक दल ने इन्हें राजनीतिक औजार के रूप में इस्तेमाल किया।
- शाह कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार:
  - पुलिस और प्रशासन राजनीतिक दबाव में थे।
- यह समस्या आपातकाल के बाद भी समाप्त नहीं हुई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

रिक्त स्थान

_____वें संविधान संशोधन द्वारा लोकसभा का कार्यकाल 5 से बढ़ाकर 6 वर्ष किया गया।

[RBSE-2025]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

आपातकाल संविधान के किस अनुच्छेद के अंतर्गत लागू किया गया? [RBSE-2023]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

भारत में आपातकाल की घोषणा कब हुई?

[RBSE-2025]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

25 जून 1975 को आपातकाल की घोषणा किस राष्ट्रपति ने की?

[Model Paper-2026]





RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1975 को इंदिरा गाँधी का निर्वाचन किस न्यायालय ने अवैध घोषित किया? [RBSE-2026]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रेस सेंसरशिप क्या है?

[Model Paper-2025]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

सरकार ने राष्ट्रीय आपातकाल लगाने के क्या कारण बताए?

[Model Paper-2025]



आपातकाल के बाद की राजनीति

I. 1977 का चुनाव

- जनवरी 1977 में सरकार ने चुनाव कराने का फैसला किया।
- सभी राजनीतिक नेताओं और कार्यकर्ताओं को जेल से रिहा किया गया।
- मार्च 1977 में लोकसभा चुनाव हुए।
- विपक्ष को तैयारी के लिए कम समय मिला।

II . जनता पार्टी का गठन

आपातकाल से पहले ही विपक्षी दल एक-दूसरे के करीब आने लगे थे।

चुनाव से पहले

विभिन्न विपक्षी दल

↓

एकजुट हुए

↓

जनता पार्टी का गठन

↓

जयप्रकाश नारायण का नेतृत्व स्वीकार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- आपातकाल-विरोधी कुछ कांग्रेसी नेता भी जनता पार्टी में शामिल हुए।
- जगजीवन राम के नेतृत्व में कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी बनी।
- बाद में यह भी जनता पार्टी में शामिल हो गई।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

III. 1977 चुनाव : आपातकाल पर जनमत-संग्रह

जनता पार्टी ने चुनाव को आपातकाल पर जनमत-संग्रह का रूप दिया।

A. प्रमुख चुनावी मुद्दे

- शासन का अलोकतांत्रिक चरित्र
- आपातकाल की ज्यादतियाँ
- हजारों गिरफ्तारियाँ
- प्रेस सेंसरशिप

B. विपक्ष को लाभ

- जनता पार्टी बनने से गैर-कांग्रेसी वोटों का विभाजन कम हुआ।
- जनमत कांग्रेस के विरुद्ध था।

IV . 1977 लोकसभा चुनाव परिणाम

दल/स्थिति	परिणाम
कांग्रेस	154 सीटें
कांग्रेस का मत प्रतिशत	35% से कम
जनता पार्टी + सहयोगी	330/542 सीटें
जनता पार्टी अकेले	295 सीटें

V. उत्तर भारत में कांग्रेस की स्थिति

कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली:

- बिहार
- उत्तर प्रदेश
- दिल्ली
- हरियाणा
- पंजाब

केवल एक-एक सीट:

- राजस्थान
- मध्य प्रदेश

प्रमुख पराजय

- इंदिरा गांधी — रायबरेली
- संजय गांधी — अमेठी



VI. उत्तर-दक्षिण चुनावी अंतर

कांग्रेस पूरे भारत में समान रूप से नहीं हारी।

कांग्रेस की बेहतर स्थिति

- महाराष्ट्र
- गुजरात
- उड़ीसा

- दक्षिण भारत के राज्य

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कारण

- आपातकाल का प्रभाव सभी राज्यों में समान नहीं था।
- जबरन:
  - विस्थापन
  - नसबंदी मुख्यतः उत्तर भारत में हुई।
- उत्तर भारत के मध्यवर्ग का एक हिस्सा कांग्रेस से दूर हुआ।
- मध्यवर्ग के कई वर्ग जनता पार्टी से जुड़े।

VII. जनता सरकार

A. प्रधानमंत्री पद की प्रतिस्पर्धा

तीन प्रमुख नेता:

- मोरारजी देसाई
- चरण सिंह
- जगजीवन राम

B. परिणाम

- मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने।
- लेकिन जनता पार्टी में सत्ता-संघर्ष जारी रहा।

VIII. जनता सरकार की समस्याएँ

A.मुख्य कमजोरियाँ

- आंतरिक तालमेल का अभाव।
- दिशा का अभाव।
- स्पष्ट नेतृत्व का अभाव।
- साझा कार्यक्रम का अभाव।
- कांग्रेस की नीतियों में मूलभूत बदलाव नहीं कर सकी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

B. परिणाम

- जनता पार्टी टूट गई।
- मोरारजी देसाई सरकार ने 28 महीने में बहुमत खो दिया।
- कांग्रेस के समर्थन से चरण सिंह सरकार बनी।
- कांग्रेस ने समर्थन वापस लिया।
- चरण सिंह सरकार केवल 4 महीने चली।

IX. 1980 का चुनाव

- जनवरी 1980 में पुनः लोकसभा चुनाव हुए।
- जनता पार्टी को भारी पराजय मिली।
- विशेष रूप से उत्तर भारत में करारी हार।
- इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने बड़ी सफलता प्राप्त की।
- कांग्रेस को 353 सीटें मिलीं।
- कांग्रेस फिर सत्ता में आई।

X. लोकतांत्रिक सबक

अस्थिर सरकार + आंतरिक कलह

↓

मतदाताओं की नाराजगी

↓

चुनावी दंड

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

XI. आपातकाल की राजनीतिक विरासत

A. कांग्रेस के स्वरूप में परिवर्तन

1969 से पहले कांग्रेस:

- विभिन्न विचारधाराओं,
- नेताओं,
- कार्यकर्ताओं को साथ लेकर चलती थी।

1969 के बाद

- कांग्रेस ने अपने को अधिक स्पष्ट विचारधारा से जोड़ा।
- स्वयं को:
  - समाजवादी
  - गरीबों की हिमायती पार्टी के रूप में प्रस्तुत किया।
- पार्टी की सफलता तेजी से इंदिरा गांधी की लोकप्रियता पर निर्भर होने लगी।

XII. गैर-कांग्रेसवाद

- कांग्रेस के बदलते स्वरूप के कारण विपक्षी दल गैर-कांग्रेसवाद की राजनीति की ओर बढ़े।
- विपक्ष ने समझा कि गैर-कांग्रेसी वोटों का विभाजन नहीं होना चाहिए।
- इस रणनीति ने 1977 के चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

XIII. पिछड़े वर्गों की राजनीति का उभार

- 1977 के बाद पिछड़े वर्गों की भलाई का मुद्दा अधिक महत्वपूर्ण होने लगा।
- उत्तर भारत में पिछड़ी जातियों के मतदान का प्रभाव दिखाई दिया।
- 1977 के विधानसभा चुनावों में कई उत्तर भारतीय राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकारें बनीं।
- इनमें पिछड़ी जातियों के नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बिहार में अन्य पिछड़ी जातियों के आरक्षण का प्रश्न प्रमुख बना।
- केंद्र की जनता सरकार ने मंडल आयोग नियुक्त किया।
- आपातकाल के बाद हुए चुनावों ने दलीय व्यवस्था में इस बदलाव की प्रक्रिया को गति दी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

XIV. संवैधानिक संकट बनाम राजनीतिक संकट

A. संवैधानिक संकट

- संसद और न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र को लेकर संघर्ष।
- आपातकालीन शक्तियों के प्रयोग को लेकर विवाद।

B. राजनीतिक संकट

- सत्ताधारी दल के पास पूर्ण बहुमत होने के बावजूद लोकतांत्रिक प्रक्रिया को रोकने का निर्णय।
- संविधान निर्माताओं की अपेक्षा थी कि:

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- राजनीतिक दल लोकतांत्रिक मानकों का पालन करेंगे।
- सरकार आपातकालीन शक्तियों का प्रयोग विधि के शासन के भीतर करेगी।
- लेकिन आपातकाल में इन व्यापक शक्तियों का दुरुपयोग हुआ।

C. निष्कर्ष

- तत्कालीन राजनीतिक संकट संवैधानिक संकट से अधिक गंभीर था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

XV. जन आंदोलन बनाम संस्था आधारित लोकतंत्र

आपातकाल के आसपास एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठा—

संस्था-आधारित लोकतंत्र

बनाम

स्वतःस्फूर्त जन-भागीदारी

- संसदीय लोकतंत्र में जन आंदोलन की भूमिका और सीमा पर बहस हुई।
- दलीय प्रणाली जनता की सभी आकांक्षाओं को पर्याप्त रूप से अभिव्यक्त नहीं कर पा रही थी।
- इससे संस्था-आधारित लोकतंत्र और जन-भागीदारी आधारित लोकतंत्र के बीच तनाव दिखाई दिया।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

आपातकाल के कोई दो सबक बताइए।

[RBSE-2024]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

क्या जून 1975 के आपातकाल से कोई सबक मिलता है?

[Model Paper-2024]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1980 में मध्यावधि चुनाव क्यों करवाने पड़े?

[Model Paper-2023]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

निबंधात्मक प्रश्न

आपातकाल के बाद 1977 के लोकसभा चुनाव और जनता पार्टी सरकार की विवेचना कीजिए।

[RBSE-2026]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रमुख व्यक्तित्व : संक्षिप्त परिचय

जयप्रकाश नारायण

- युवावस्था में मार्क्सवादी।
- कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी और सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक महासचिव।
- 1942 भारत छोड़ो आंदोलन के नायक।
- नेहरू के उत्तराधिकारी के रूप में देखे गए।
- नेहरू मंत्रिमंडल में शामिल होने से इनकार किया।
- 1955 के बाद सक्रिय राजनीति छोड़ी।

- बाद में गांधीवादी बने।
- भूदान आंदोलन में सक्रिय।
- नागा विद्रोहियों से सुलह के प्रयास किए।
- कश्मीर में शांति प्रयास किए।
- चंबल के डकैतों के आत्मसमर्पण में भूमिका।
- बिहार आंदोलन के नेता।
- आपातकाल के विरोध के प्रतीक।
- जनता पार्टी के गठन के प्रेरणास्रोत।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1974 में 'सम्पूर्ण क्रांति' का आह्वान किसने किया?

[RBSE-2023, RBSE-2025]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1975 के संसद-मार्च का नेतृत्व किसने किया?

[Model Paper-2026]

